Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वंदे मातरम् से जन गण मन तकः बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर के राष्ट्रवादी विचारों का विकास

जितेन्द्र

शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक।

डॉ. अशोक कुमार

शोध निर्देशक, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक।

सारांश

भारतीय राष्ट्रवाद का बौद्धिक और सांस्कृतिक निर्माण केवल राजनीतिक आंदोलनों का परिणाम नहीं था, बल्कि वह साहित्य, गीत, उपन्यास और दार्शनिक चिंतन के माध्यम से भी विकसित हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर ने इस विकास यात्रा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने 'आनन्दमठ' और 'वंदे मातरम्' के माध्यम से भारतमाता की सांस्कृतिक, धार्मिक और भावनात्मक छवि को निर्मित किया, जिसने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय चेतना को तीव्र किया। दूसरी ओर रविन्द्र नाथ टैगोर ने राष्ट्रवाद को अधिक व्यापक, मानवीय, नैतिक और समावेशी आधार प्रदान किया। उनका 'जन गण मन' केवल राज्य–राष्ट्र की स्तुति नहीं, बल्कि भारत की बहुलतापूर्ण आत्मा और सामूहिक नियति का काव्यात्मक रूप है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य बंकिम से टैगोर तक राष्ट्रवादी विचारों के विकास को समझना, उनके वैचारिक अंतरों और साम्य बिंदुओं का विश्लेषण करना तथा यह स्पष्ट करना है कि भारतीय राष्ट्रवाद सांस्कृतिक पुनर्जागरण से मानवतावादी राष्ट्र–दृष्टि तक किस प्रकार रूपांतरित हुआ। बंकिम का राष्ट्रवाद जहाँ सांस्कृतिक एकीकरण और धार्मिक प्रतीकवाद पर आधारित है, वहीं टैगोर का राष्ट्रवाद मनुष्य, नैतिकता, सह–अस्तित्व और बहुलता को केंद्र में रखता है। इस प्रकार यह शोध–पत्र सिद्ध करता है कि 'वंदे मातरम्' से 'जन गण मन' तक की यात्रा भारतीय राष्ट्रवाद के वैचारिक परिपक्वता की यात्रा है।

मुख्य शब्दः राष्ट्रवाद, वंदे मातरम्, जन गण मन, बंकिम चन्द्र चटर्जी, रविन्द्र नाथ टैगोर, भारतमाता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, मानवतावादी राष्ट्रवाद

परिचय

उपनिवेशकालीन भारत में राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक प्रतिरोध की भाषा नहीं था, बल्कि वह सांस्कृतिक आत्मबोध, ऐतिहासिक स्मृति, सामाजिक पुनरुत्थान और साहित्यिक अभिव्यक्ति का भी सशक्त माध्यम था। ब्रिटिश शासन ने भारत को केवल प्रशासनिक और आर्थिक स्तर पर

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

ही अपने अधीन नहीं किया, बल्कि उसने भारतीय समाज के भीतर सांस्कृतिक हीनता, ऐतिहासिक विस्मरण और मानसिक पराधीनता की भावना को भी गहरा किया। औपनिवेशिक सत्ता की यही रणनीति थी कि भारतीयों को अपनी परंपराओं, भाषाओं, धर्म, संस्कृति और अतीत से विमुख कर दिया जाए, ताकि वे स्वयं को शासित होने योग्य और पश्चिमी सभ्यता को श्रेष्ठ मानने लगें। ऐसी ऐतिहासिक परिस्थिति में भारतीय साहित्यकारों, चिंतकों और समाज–सुधारकों ने राष्ट्रीय पुनर्जागरण के वाहक के रूप में कार्य किया। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर जन–जागरण, आत्मगौरव और राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का उपकरण बनाया।

उन्नीसवीं शताब्दी का बंगाल इस नवजागरण का प्रमुख केंद्र था। बंगाल पुनर्जागरण ने भारतीय समाज को आधुनिक बौद्धिक दृष्टि, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक पुनर्स्मरण की दिशा प्रदान की। इसी पृष्ठभूमि में बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर जैसे महत्त्वपूर्ण साहित्यकार सामने आए, जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को दो भिन्न किंतु परस्पर संबद्ध वैचारिक आधार दिए। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने राष्ट्र को भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप में समझा। उन्होंने मातृभूमि को 'माता' के रूप में कल्पित कर भारतीय समाज के भीतर राष्ट्र के प्रति श्रद्धा, भक्ति और समर्पण की भावना उत्पन्न की। उनके लिए राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा नहीं था, बल्कि वह एक पवित्र सत्ता थी, जिसकी सेवा धर्म के समान महान कर्तव्य थी। इस प्रकार बंकिम के साहित्य में राष्ट्रवाद सांस्कृतिक पुनरुत्थान, धार्मिक प्रतीकवाद और राष्ट्रीय गौरव का समन्वित रूप बनकर उभरता है।

इसके विपरीत रविन्द्र नाथ टैगोर ने राष्ट्रवाद को अधिक व्यापक, नैतिक, मानवीय और समावेशी दृष्टि से देखा। उन्होंने राष्ट्र को किसी एक धार्मिक पहचान, सांस्कृतिक आग्रह या राजनीतिक उग्रता तक सीमित नहीं किया। उनके चिंतन में राष्ट्र एक ऐसी जीवंत चेतना है, जो विविध भाषाओं, प्रांतों, समुदायों, परंपराओं और ऐतिहासिक अनुभवों को एक साथ जोड़ती है। टैगोर का राष्ट्रवाद बहुलता में एकता, मनुष्य की गरिमा, नैतिक स्वतंत्रता और विश्वबंधुत्व पर आधारित है। इसीलिए उनका राष्ट्रवादी चिंतन केवल औपनिवेशिक विरोध तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह इस प्रश्न को भी उठाता है कि राष्ट्र किस प्रकार मानवीय मूल्यों के आधार पर निर्मित होना चाहिए। 'वंदे मातरम्' और 'जन गण मन' इन दोनों दृष्टियों के प्रतिनिधि गीत हैं, जिनमें भारतीय राष्ट्रीय चेतना के क्रमिक विकास का इतिहास निहित है। 'वंदे मातरम्', जो बंकिम के उपन्यास 'आनन्दमठ' में 1882 में प्रकाशित हुआ, स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरक नारा बना और उसने लाखों भारतीयों के भीतर देशभक्ति की प्रबल भावना उत्पन्न की। दूसरी ओर 'जन गण मन' भारत की सामूहिक चेतना, बहुलतापूर्ण एकता और राष्ट्रीय नियति का गीत है, जिसे बाद में 24 जनवरी 1950 को भारत के राष्ट्रगान के रूप

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

में स्वीकार किया गया। इस प्रकार इन दोनों रचनाओं के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक यात्रा को समझा जा सकता है, जो सांस्कृतिक आवेग से आरंभ होकर मानवीय और समावेशी राष्ट्रीय दृष्टि तक पहुँचती है।

बंकिम चन्द्र चटर्जी का राष्ट्रवादी चिंतन

बंकिम चन्द्र चटर्जी आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के आरंभिक वैचारिक शिल्पियों में अग्रणी स्थान रखते हैं। उनका राष्ट्रवादी चिंतन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि वह भारतीय समाज में सांस्कृतिक स्वाभिमान, ऐतिहासिक चेतना और आत्मगौरव के पुनरुत्थान का व्यापक कार्यक्रम था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन था, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज में आत्मविश्वास की कमी, सांस्कृतिक हीनता और सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। ऐसी परिस्थिति में बंकिम ने साहित्य को एक सशक्त माध्यम बनाकर राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का कार्य किया। उन्होंने भारतीयों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया कि उनका अतीत गौरवशाली रहा है और उनकी सांस्कृतिक परंपराएँ सशक्त और जीवंत हैं।

बंकिम के लिए राष्ट्र केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं था, बल्कि वह एक जीवंत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सत्ता था। उनके राष्ट्रवाद की मूल भावना मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, भक्ति और समर्पण पर आधारित है। उन्होंने राष्ट्र को "माता" के रूप में प्रस्तुत कर उसे भावनात्मक और धार्मिक महत्व प्रदान किया। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ' में यह राष्ट्रकल्पना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जहाँ भारत को एक देवी–मूर्ति के रूप में चित्रित किया गया है। 'वंदे मातरम्' इसी विचारधारा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है, जिसमें मातृभूमि को "सुजलाम्, सुफलाम्, शस्य–श्यामलाम्" कहकर उसकी प्राकृतिक समृद्धि, पवित्रता और सौंदर्य का वर्णन किया गया है। यह गीत केवल साहित्यिक रचना नहीं रहा, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरक घोष बन गया, जिसने भारतीयों के भीतर राष्ट्रीय एकता, उत्साह और संघर्ष की भावना को प्रबल किया।

बंकिम के राष्ट्रवाद की प्रमुख विशेषता उसका सांस्कृतिक आग्रह है। वे मानते थे कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति और सामूहिक परंपराओं में निहित होती है। इसलिए उनके साहित्य में राष्ट्रवाद और धर्म का घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है। उन्होंने हिंदू धार्मिक प्रतीकों, देवी–देवताओं और पौराणिक संदर्भों के माध्यम से राष्ट्र को एक पवित्र स्वरूप प्रदान किया। यह दृष्टिकोण उस समय के संदर्भ में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ, क्योंकि इससे जनता के भीतर राष्ट्रीय भावना को गहराई से स्थापित करने में सहायता मिली। बंकिम का राष्ट्रवाद भावनात्मक और प्रेरणात्मक है, जो लोगों को

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

एक साझा सांस्कृतिक पहचान के माध्यम से जोड़ने का प्रयास करता है। हालाँकि बंकिम का राष्ट्रवादी चिंतन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। राष्ट्र को देवी–रूप में प्रस्तुत करने और धार्मिक प्रतीकों पर अधिक बल देने से राष्ट्रवाद एक विशेष सांस्कृतिक ढाँचे तक सीमित हो सकता है। इससे यह संभावना उत्पन्न होती है कि राष्ट्र की अवधारणा सभी समुदायों के लिए समान रूप से समावेशी न रह पाए। यही कारण है कि आगे चलकर रविन्द्र नाथ टैगोर जैसे चिंतकों ने राष्ट्रवाद को अधिक व्यापक, मानवीय और बहुलतावादी दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता पर बल दिया। इस प्रकार बंकिम चन्द्र चटर्जी का राष्ट्रवादी चिंतन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की आधारशिला के रूप में कार्य करता है। उन्होंने राष्ट्रवाद को भावनात्मक शक्ति, सांस्कृतिक गहराई और जन–जागरण का स्वर प्रदान किया। उनके बिना भारतीय राष्ट्रवाद के प्रारंभिक स्वरूप की कल्पना अधूरी है, क्योंकि उन्होंने ही उस चेतना को जन्म दिया जिसने आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक जन–आंदोलन में परिवर्तित किया।

रविन्द्र नाथ टैगोर का राष्ट्रवादी चिंतन

रविन्द्र नाथ टैगोर भारतीय राष्ट्रवाद के ऐसे विशिष्ट विचारक थे जिन्होंने राष्ट्रवाद को एक व्यापक, मानवीय और नैतिक परिप्रेक्ष्य में समझा। वे राष्ट्रवाद के समर्थक अवश्य थे, किंतु उन्होंने उसके संकीर्ण, उग्र और बहिष्कारी स्वरूप की तीव्र आलोचना भी की। उनके विचार में यदि राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक शक्ति, सामूहिक अहंकार या आक्रामकता तक सीमित रह जाए, तो वह मानवता के लिए हानिकारक बन सकता है। इसलिए उन्होंने राष्ट्रवाद को मनुष्य की स्वतंत्रता, नैतिक चेतना, सांस्कृतिक बहुलता और आध्यात्मिक एकता के साथ जोड़ा। टैगोर का राष्ट्रवाद इस दृष्टि से विशिष्ट है कि वह व्यक्ति और समाज दोनों की गरिमा को समान रूप से महत्व देता है। टैगोर का राष्ट्रवादी चिंतन केवल सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि वह उनके सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। बंग–भंग (1905) के विरोध में चल रहे स्वदेशी आंदोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया और उसे केवल राजनीतिक आंदोलन न मानकर सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का अवसर माना। उन्होंने 'रक्षाबंधन' जैसे प्रतीकात्मक माध्यमों के द्वारा हिंदू–मुस्लिम एकता का संदेश दिया, जिससे राष्ट्रवाद को साम्प्रदायिक विभाजन से ऊपर उठाने का प्रयास किया गया। उनके 'स्वदेशी समाज' (1904) के विचार में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि वे आत्मनिर्भरता, ग्राम–आधारित विकास और सामाजिक सहयोग को राष्ट्र–निर्माण का आधार मानते थे। इस प्रकार टैगोर का राष्ट्रवाद केवल राज्य केन्द्रित नहीं, बल्कि समाज केन्द्रित और मानव केन्द्रित था। टैगोर की राष्ट्र–कल्पना बंकिम चन्द्र चटर्जी की तुलना में अधिक उदार, समन्वयी और बहुलतावादी है। जहाँ बंकिम के यहाँ राष्ट्र एक मातृ–रूप में पूजनीय सत्ता के रूप में उभरता

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

है, वहीं टैगोर के यहाँ राष्ट्र विविध भाषाओं, प्रदेशों, संस्कृतियों और समुदायों की संयुक्त चेतना का प्रतीक है। वे भारत को एक ऐसी जीवंत इकाई के रूप में देखते हैं, जिसमें विभिन्नताओं के बावजूद एक गहरी आंतरिक एकता विद्यमान है। 'जन गण मन' इसी विचारधारा का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस गीत में भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, सांस्कृतिक विविधताओं और सामूहिक नियति का अत्यंत सुंदर समन्वय मिलता है। इसमें किसी एक समुदाय या धर्म का आग्रह नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत की समावेशी आत्मा का उदात्त स्वर है। यही कारण है कि इसे स्वतंत्र भारत के राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया गया।

टैगोर के राष्ट्रवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका नैतिक और मानवीय आधार है। वे उस राष्ट्रवाद से सावधान करते हैं जो मनुष्य को हिंसा, घृणा, प्रतिस्पर्धा और संकीर्णता की ओर ले जाए। उनके अनुसार सच्चा राष्ट्रवाद वह है जो मानवता को विभाजित न करे, बल्कि उसे जोड़ने का कार्य करे। वे राष्ट्र की गरिमा को अन्य राष्ट्रों के प्रति शत्रुता में नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, सह–अस्तित्व और सहयोग में देखते हैं। जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919) के बाद उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त 'नाइटहुड' की उपाधि का त्याग कर यह स्पष्ट कर दिया कि उनके लिए नैतिकता और मानवता किसी भी राजनीतिक सम्मान से अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह उनका राष्ट्रवाद था जो अन्याय के विरुद्ध खड़ा होता है, परंतु घृणा और हिंसा का समर्थन नहीं करता। इस प्रकार रविन्द्र नाथ टैगोर का राष्ट्रवादी चिंतन भारतीय राष्ट्रवाद को एक उच्चतर, संतुलित और मानवीय दिशा प्रदान करता है। उन्होंने राष्ट्रवाद को केवल स्वतंत्रता के संघर्ष का साधन नहीं रहने दिया, बल्कि उसे नैतिकता, बहुलता और मानवतावाद से समृद्ध किया। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे हमें यह सिखाते हैं कि सच्चा राष्ट्रवाद वही है जो मनुष्य की स्वतंत्रता, समानता और सह–अस्तित्व को सुनिश्चित करे।

बंकिम से टैगोर तक राष्ट्रवादी विचारों का विकास

बंकिम चन्द्र चटर्जी से रविन्द्र नाथ टैगोर तक राष्ट्रवादी विचारों का विकास भारतीय राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक परिपक्वता, संवेदनात्मक विस्तार और दार्शनिक गहराई को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है। यह विकास केवल दो साहित्यकारों के बीच विचारों का अंतर नहीं है, बल्कि वह भारतीय राष्ट्रवाद की बदलती ऐतिहासिक आवश्यकताओं, सामाजिक परिस्थितियों और सांस्कृतिक चिंताओं का भी द्योतक है। बंकिम उस समय के साहित्यकार थे जब भारतीय समाज औपनिवेशिक शासन के दबाव में अपनी अस्मिता, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक स्मृति को पुनः प्राप्त करने के संघर्ष में था। इसलिए उनके राष्ट्रवाद का स्वर अधिक जागरणकारी, प्रेरणात्मक और आवेगपूर्ण है। उन्होंने राष्ट्र को एक जीवंत, पवित्र और मातृरूप सत्ता के रूप में देखा। उनके साहित्य में मातृभूमि केवल भूमि नहीं, बल्कि श्रद्धा, भक्ति और बलिदान की

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

अधिकारी देवी–स्वरूपा है। इसीलिए 'वंदे मातरम्' केवल एक गीत नहीं रहा, बल्कि राष्ट्रीय जागरण का मंत्र बन गया।

बंकिम के राष्ट्रवाद की जड़ें सांस्कृतिक पुनर्जागरण में निहित थीं। वे समझते थे कि किसी भी पराधीन समाज को स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले अपने आत्मगौरव, ऐतिहासिक बोध और सांस्कृतिक शक्ति को पुनर्स्थापित करना आवश्यक है। अतः उन्होंने अतीत की महिमा, धर्म–संबद्ध प्रतीकों, वीरता, त्याग और मातृभूमि–भक्ति को केंद्र में रखकर ऐसी राष्ट्रचेतना निर्मित की, जिसने भारतीय समाज को मानसिक दासता से बाहर निकालने में सहायता की। उनके यहाँ राष्ट्रवाद भावनात्मक संगठन की शक्ति है। वह जनता को केवल राजनीतिक रूप से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी एक सूत्र में बाँधता है। किंतु इसी के साथ यह भी देखा गया कि बंकिम का राष्ट्रवाद प्रतीकात्मक रूप से एक विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा पर अधिक आधारित है, जिससे उसकी व्यापकता पर प्रश्न भी उठते हैं। फिर भी यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि उनके बिना भारतीय राष्ट्रवाद के प्रारंभिक सांस्कृतिक स्वरूप की कल्पना अधूरी रहती। रविन्द्र नाथ टैगोर ने इसी राष्ट्रवादी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उसे अधिक व्यापक, संतुलित और नैतिक आधार प्रदान किया। उन्होंने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक प्रतिरोध या सांस्कृतिक गौरव तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे मानवता, सह–अस्तित्व और नैतिक स्वतंत्रता के साथ जोड़ा। टैगोर ने यह अनुभव किया कि यदि राष्ट्रवाद केवल आवेग, उग्रता और सांस्कृतिक आग्रह तक सीमित रह जाए, तो वह मनुष्य की स्वतंत्रता और सामाजिक समरसता के लिए बाधक भी बन सकता है। इसलिए उनके चिंतन में राष्ट्र कोई संकीर्ण सत्ता नहीं, बल्कि विविधताओं से निर्मित एक जीवंत सामूहिक चेतना है। उनके लिए भारत की शक्ति उसकी बहुभाषिकता, बहुधार्मिकता, बहुसांस्कृतिकता और सहअस्तित्व की परंपरा में निहित है। इस दृष्टि से उनका राष्ट्रवाद अधिक समन्वयी, उदार और आधुनिक प्रतीत होता है।

बंकिम और टैगोर के राष्ट्रवादी विचारों के बीच सबसे महत्त्वपूर्ण अंतर उनके प्रतीकों और अभिव्यक्ति की शैली में दिखाई देता है। बंकिम के यहाँ राष्ट्र एक आराध्य मातृ–देवी है, जिसके लिए समर्पण और बलिदान सर्वोच्च मूल्य हैं। टैगोर के यहाँ राष्ट्र जनसमूहों की समवेत चेतना, साझा नियति और नैतिक एकता का प्रतीक है। बंकिम की भाषा में भावनात्मक उष्मा, संघर्ष का आवाहन और सांस्कृतिक उत्साह है, जबकि टैगोर की भाषा में संतुलन, करुणा, नैतिकता और समावेशिता है। बंकिम जनता को जगाते हैं, टैगोर उस जागरण को दिशा देते हैं। बंकिम के यहाँ राष्ट्रीयता का स्वर ऊर्जस्वित और प्रज्ज्वलित है, टैगोर के यहाँ वही स्वर आत्ममंथन, सह–अस्तित्व और सार्वभौमिक मानवीयता से युक्त हो जाता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

'वंदे मातरम्' और 'जन गण मन' का तुलनात्मक महत्व भी इसी विकास–क्रम को समझने में सहायता करता है। 'वंदे मातरम्' भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में राष्ट्रीय अस्मिता और प्रतिरोध का घोष बना। इस गीत ने जनता के भीतर यह भावना उत्पन्न की कि मातृभूमि केवल राजनीतिक इकाई नहीं, बल्कि उपासना और रक्षा के योग्य पवित्र सत्ता है। दूसरी ओर 'जन गण मन' भारतीय राष्ट्र की बहुलतापूर्ण संरचना, उसके विशाल भूगोल, विविध समुदायों और सामूहिक नियति का गीत है। इसमें राष्ट्र की संकीर्ण परिभाषा नहीं, बल्कि उसकी लोकतांत्रिक और समावेशी आत्मा का स्वर है। यही कारण है कि भारतीय राष्ट्रीय जीवन में दोनों रचनाओं को विशिष्ट और सम्मानित स्थान प्राप्त है। एक राष्ट्रीय गीत के रूप में सांस्कृतिक जागरण का प्रतीक है, दूसरा राष्ट्रगान के रूप में संवैधानिक और समावेशी राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक। इस प्रकार बंकिम से टैगोर तक राष्ट्रवादी विचारों का विकास भारतीय राष्ट्रवाद के आंतरिक रूपांतरण की कथा है। यह यात्रा सांस्कृतिक पुनरुत्थान से नैतिक उदारता तक, भावनात्मक राष्ट्रभक्ति से समावेशी राष्ट्रीय चेतना तक, और मातृभूमि आराधना से जन–समष्टि की एकता तक पहुँचती है। बंकिम ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया, उसे स्वर दिया, उसे भावनात्मक ऊर्जा प्रदान की। टैगोर ने उसी राष्ट्रवाद को परिष्कृत किया, उसका मानवीयकरण किया और उसे बहुलता तथा नैतिकता के धरातल पर प्रतिष्ठित किया।

साहित्य, संगीत और राष्ट्र–निर्माण

बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर के योगदान का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि इन्होंने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक सिद्धांत, बौद्धिक विमर्श या दार्शनिक अवधारणा भर नहीं रहने दिया, बल्कि उसे साहित्य, गीत, संगीत और जनभावना के माध्यम से जीवंत सामाजिक अनुभव बना दिया। राष्ट्रवाद यदि केवल राजनीतिक नेताओं के भाषणों या विचारकों की पुस्तकों तक सीमित रहता, तो संभवतः वह जनमानस में उतनी गहराई तक न उतर पाता। किंतु जब वही राष्ट्रभाव कविता, गीत और संगीत के रूप में अभिव्यक्त हुआ, तब उसने लोगों के हृदय, स्मृति और सामूहिक चेतना में स्थायी स्थान बना लिया। यही कारण है कि भारतीय राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में साहित्य और संगीत की भूमिका अत्यंत केंद्रीय रही है। बंकिम चन्द्र चटर्जी का 'वंदे मातरम्' इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। यह केवल एक काव्य–पंक्ति नहीं रही, बल्कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का भावात्मक मंत्र बन गई। इस गीत में मातृभूमि को "सुजलाम्, सुफलाम्, शस्य–श्यामलाम्" कहकर जिस प्रकार सौंदर्य, पवित्रता और समृद्धि के साथ चित्रित किया गया, उसने भारतीयों के भीतर देश के प्रति श्रद्धा, प्रेम और समर्पण की भावना को अत्यंत तीव्र किया। इस गीत ने राष्ट्र को एक ऐसी जीवित सत्ता के रूप में स्थापित किया जिसके लिए त्याग, संघर्ष और बलिदान नैतिक कर्तव्य बन गए। इस प्रकार 'वंदे मातरम्' ने राष्ट्रवाद को केवल विचार नहीं, बल्कि अनुभूति, भक्ति और आह्वान का रूप

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

दिया। यह गीत सभाओं, आंदोलनों, जुलूसों और जनसभा स्थलों पर गूंजकर औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध मानसिक प्रतिरोध की शक्ति बना। इसके विपरीत रविन्द्र नाथ टैगोर का 'जन गण मन' राष्ट्र–निर्माण की एक परिपक्व और समावेशी दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह गीत स्वतंत्र भारत की बहुलतापूर्ण पहचान, उसके विशाल भूगोल, विविध समुदायों और साझा राष्ट्रीय नियति का काव्यात्मक रूप है। इसमें न तो उग्रता का स्वर है और न ही संकीर्ण आग्रह का, बल्कि एक शांत, गरिमामय और व्यापक राष्ट्रीय चेतना का उदात्त भाव है। 'जन गण मन' के माध्यम से टैगोर ने यह स्पष्ट किया कि राष्ट्र केवल संघर्ष का नारा नहीं, बल्कि एक सामूहिक नैतिक और सांस्कृतिक एकता भी है। इसलिए यह गीत स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक, संवैधानिक और बहुलतावादी आत्मा का प्रतीक बन गया। इसने राष्ट्रवाद को अनुशासित, संतुलित और समन्वयी दिशा प्रदान की। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि साहित्य और संगीत में वह शक्ति होती है जो किसी भी विचार को जनजीवन का हिस्सा बना सकती है। विचार तर्क से प्रभावित करते हैं, किंतु गीत भावनाओं को स्पर्श करते हैं। कविता मनुष्य की चेतना के भीतर वह स्थान बनाती है जहाँ से सामाजिक परिवर्तन और ऐतिहासिक संकल्प उत्पन्न होते हैं। बंकिम और टैगोर दोनों ने इसी शक्ति का उपयोग किया। इन्होंने राष्ट्रवाद को केवल बुद्धि की वस्तु नहीं रहने दिया, बल्कि उसे हृदय की अनुभूति, सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक अभ्यास में बदल दिया। यही कारण है कि उनके गीत केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जीवन के स्थायी प्रतीक बन गए। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में साहित्य और संगीत सक्रिय ऐतिहासिक शक्तियों के रूप में सामने आते हैं। बंकिम और टैगोर ने सिद्ध किया कि कवि, उपन्यासकार और संगीतकार केवल सौंदर्य के रचयिता नहीं होते, बल्कि वे समाज की चेतना को दिशा देने वाले इतिहास निर्माता भी हो सकते हैं। उनकी रचनाओं ने भारतीय जनता को केवल प्रेरित नहीं किया, बल्कि राष्ट्र की सामूहिक कल्पना, भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक पहचान को भी आकार दिया। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में साहित्य और संगीत ने वही भूमिका निभाई जो राजनीतिक संघर्ष ने धरातल पर निभाई। एक ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष को स्वर दिया, तो दूसरे ने उस स्वर को राष्ट्रीय आत्मा में रूपांतरित कर दिया।

निष्कर्ष

बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर भारतीय राष्ट्रवाद के दो ऐसे महान साहित्यकार हैं जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना को दो अलग किन्तु परस्पर पूरक दिशाएँ प्रदान कीं। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक जागरण, मातृभूमि–भक्ति और भावनात्मक एकता का स्वर दिया। उनके साहित्य, विशेषकर 'वंदे मातरम्', ने भारतीय जनता के भीतर आत्मगौरव, राष्ट्रप्रेम और बलिदान की भावना को जागृत किया। उनके लिए राष्ट्र केवल एक राजनीतिक इकाई

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

नहीं था, बल्कि एक पवित्र मातृशक्ति थी, जिसकी आराधना और रक्षा प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। इस दृष्टि से बंकिम ने पराधीन भारत में राष्ट्रीय चेतना के प्रारंभिक निर्माण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूसरी ओर रविन्द्र नाथ टैगोर ने राष्ट्रवाद को अधिक व्यापक, मानवीय और नैतिक आधार प्रदान किया। उन्होंने राष्ट्र को किसी एक सांस्कृतिक आग्रह या धार्मिक पहचान तक सीमित नहीं किया, बल्कि उसे विविधताओं से निर्मित सामूहिक चेतना के रूप में समझा। 'जन गण मन' में भारत की बहुलतापूर्ण आत्मा, उसकी सांस्कृतिक व्यापकता और सामूहिक नियति का भाव प्रकट होता है। टैगोर ने यह स्पष्ट किया कि सच्चा राष्ट्रवाद वही है जो मानवता, नैतिकता, सह–अस्तित्व और समावेशिता पर आधारित हो। इस प्रकार उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को एक संतुलित और उदार दिशा दी।

"वंदे मातरम् से जन गण मन तक" की यात्रा भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की यात्रा है। यह विकास सांस्कृतिक पुनर्जागरण से नैतिक समावेशिता तक पहुँचने की प्रक्रिया को दर्शाता है। बंकिम ने राष्ट्रवाद को जागरण का स्वर दिया, जबकि टैगोर ने उसे परिपक्वता, संतुलन और व्यापकता प्रदान की। एक ने राष्ट्र को भावनात्मक शक्ति दी, दूसरे ने उसे मानवीय और संवैधानिक अर्थों में समृद्ध किया। इस कारण दोनों की रचनाएँ भारतीय राष्ट्रीय जीवन में आज भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। अंततः कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रवाद की संपूर्ण समझ बंकिम और टैगोर दोनों के संयुक्त अध्ययन से ही संभव है। बंकिम राष्ट्रीय अस्मिता के जागरण के कवि हैं, जबकि टैगोर राष्ट्रीय चेतना के नैतिक उत्कर्ष के कवि हैं। इन दोनों की रचनाएँ सिद्ध करती हैं कि साहित्य और संगीत राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में अत्यंत प्रभावशाली साधन हैं। इसलिए 'वंदे मातरम्' और 'जन गण मन' केवल गीत नहीं, बल्कि भारत की राष्ट्रीय आत्मा के दो ऐतिहासिक और अमर स्वर हैं।

संदर्भ सूची:

1. घोष, पी. (2016). बंकिमचन्द्र चटर्जी के राष्ट्रवादी विचारों का विश्लेषण. *आधुनिक भारतीय अध्ययन जर्नल, 8*(1), 45–60।
2. ठाकुर, र. (2015). *रवीन्द्रनाथ टैगोर का राष्ट्रवाद और मानवतावाद.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
3. मुखर्जी, एस. (2011). *बंकिमचन्द्र चटर्जी और भारतीय राष्ट्रवाद.* कोलकाता: साहित्य अकादमी।
4. मिश्रा, वी. (2019). जन गण मन और भारतीय राष्ट्र की अवधारणा. *सामाजिक विज्ञान जर्नल, 12*(2), 55–70।
5. लिप्नर, जे. जे. (2009). *हिन्दू विचारधारा और बंकिमचन्द्र.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

6. रामविलास शर्मा. (2005). *भारतीय पुनर्जागरण और राष्ट्रवाद.* नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
7. शर्मा, आर. स. (2006). *भारत का प्राचीन इतिहास.* नई दिल्लीः ओरिएंट ब्लैकस्वान।
8. सेन, ए. (2018). टैगोर का राष्ट्रवादः एक आलोचनात्मक अध्ययन. *इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 79*(3), 310–325।
9. दास, एस. (2013). वंदे मातरम् और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन. *इतिहास शोध पत्रिका, 25*(4), 78–92।
10. नामवर सिंह. (2010). *आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ.* नई दिल्लीः लोकभारती प्रकाशन।